ICAR-CIFE Organise Training on "Aqua-Business Opportunities for Fisheries Cooperatives"

The Agri-Business Incubation (ABI) Centre and the Centre of Excellence in Fisheries Entrepreneurship Development (CEFED), ICAR–Central Institute of Fisheries Education (ICAR-CIFE), Mumbai, successfully organised two one-day outreach and sensitisation training programmes titled *"Aqua-Business Opportunities for Fisheries Cooperatives"* on 27 and 29 January 2026. The programmes aimed to enhance awareness and practical understanding of entrepreneurship, innovation, and viable aqua-business opportunities among fisheries cooperative members.

The programmes were coordinated by Dr. Shivaji Argade and Dr. S. P. Shukla under the guidance of Dr. N. P. Sahu, Director, ICAR-CIFE. A total of 84 participants (Female: 65 & Male: 19) from Maharashtra Jilha Ekvira Fisheries & Farming Sahakari Sanstha Maryadit, Arnala, Palghar and Kharekuran Macchimar Sarvodaya Sahakari Sanstha Maryadit, Kharekuran, Palghar actively participated. Deliberate efforts were made to ensure the participation of both men and women members, highlighting inclusive and cooperative-led enterprise development.

The technical sessions were designed with a strong practice-to-business orientation. Mrs. Snehal Parab, Senior Research Fellow, ABI, presented scalable aqua-business opportunities suitable for cooperative ownership and collective entrepreneurship. Government schemes and financial assistance available for fisheries cooperatives were explained by Ms. Mayuri Devkate and Ms. Nupur Padwal, Young Professionals, CEFED, enabling members-particularly women and youth-to understand pathways for accessing subsidies, credit, and incubation support. A key inspirational session on the "Aquapreneurship Journey of Aquadore Ventures Private Limited, Alibaug (ICAR-CIFE Incubatee)" provided real-world insights into transforming fisheries-based ideas into successful enterprises. The session highlighted challenges, market strategies, technology adoption, and the role of incubation support, motivating cooperative members to visualise entrepreneurship beyond traditional fishing and farming activities. Value addition and market linkage aspects were addressed through a session on value-added fish product packaging and marketing by Dr. Layana P., Senior Scientist, emphasizing practical opportunities for women-led and home-scale cooperative enterprises. A hands-on demonstration on fish manure preparation and fish manure technology by Dr. Arpita Sharma, Principal Scientist, showcased low-cost circular economy models that cooperatives can adopt for additional income generation. Emerging business opportunities such as aqua-tourism, presented by Dr. Shivaji Argade, and drone applications in fisheries, demonstrated by Mr. Abuthagir Ibrahim, Scientist, and Dr. Shivaji Argade, exposed participants to technology-driven, labour-saving innovations. These sessions particularly emphasized how women members can independently monitor farms, reduce drudgery, improve safety, and participate confidently in technology-enabled cooperative businesses.

The programmes concluded with interactive discussions, reinforcing the importance of practical skills, innovation, and collective entrepreneurship in strengthening fisheries cooperatives, enhancing livelihoods, and ensuring meaningful participation of both men and women in cooperative-based aqua-business ventures. Ms. Sanchita and Mr. Manoj provided technical support for the smooth conduct of the programmes.

आईसीएआर–सीआईएफई द्वारा “मत्स्य सहकारी समितियों के लिए एक्वा-बिज़नेस अवसर” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

एग्री-बिज़नेस इन्क्यूबेशन (ABI) केंद्र एवं मत्स्य उद्यमिता विकास उत्कृष्टता केंद्र (CEFED), आईसीएआर–केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान (ICAR-CIFE), मुंबई द्वारा 27 एवं 29 जनवरी 2026 को “मत्स्य सहकारी समितियों के लिए एक्वा-बिज़नेस अवसर” विषय पर दो एक-दिवसीय आउटरीच एवं संवेदनशीलता प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य मत्स्य सहकारी समितियों के सदस्यों में उद्यमिता, नवाचार तथा व्यवहार्य एक्वा-बिज़नेस अवसरों के प्रति जागरूकता एवं व्यावहारिक समझ को सुदृढ़ करना था।

इन कार्यक्रमों का समन्वय डॉ. शिवाजी अरगडे एवं डॉ. एस. पी. शुक्ला द्वारा, आईसीएआर-सीआईएफई के निदेशक डॉ. एन. पी. साहू के मार्गदर्शन में किया गया। महाराष्ट्र जिल्हा एकवीरा फिशरीज एंड फार्मिंग सहकारी संस्था मर्यादित, अर्नाला, पालघर तथा खारेकुरन मच्छीमार सर्वोदय सहकारी संस्था मर्यादित, खारेकुरन, पालघर से कुल 84 प्रतिभागियों (महिला: 65; पुरुष: 19) ने सक्रिय रूप से भाग लिया। पुरुष एवं महिला दोनों सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयास किए गए, जिससे समावेशी एवं सहकारी-नेतृत्व वाले उद्यम विकास पर बल दिया गया।

तकनीकी सत्रों को व्यवहार-से-व्यवसाय उन्मुख दृष्टिकोण के साथ तैयार किया गया। एबीआई की वरिष्ठ अनुसंधान फेलो श्रीमती स्नेहल परब ने सहकारी स्वामित्व एवं सामूहिक उद्यमिता के लिए उपयुक्त, विस्तार योग्य एक्वा-बिज़नेस अवसरों पर प्रस्तुति दी। मत्स्य सहकारी समितियों के लिए उपलब्ध सरकारी योजनाओं एवं वित्तीय सहायता की जानकारी सीफेड की यंग प्रोफेशनल्स सुश्री मयूरी देवकाते एवं सुश्री नुपुर पडवल द्वारा दी गई, जिससे सदस्यों-विशेषकर महिलाओं एवं युवाओं-को सब्सिडी, ऋण एवं इन्क्यूबेशन सहायता तक पहुँच के मार्ग समझने में सहायता मिली।

“एक्वाडोर वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड, अलीबाग” की एक्वाप्रेन्योरशिप यात्रा पर एक प्रमुख प्रेरणादायक सत्र में मत्स्य-आधारित विचारों को सफल उद्यमों में परिवर्तित करने के वास्तविक अनुभव साझा किए गए। इस सत्र में चुनौतियाँ, बाज़ार रणनीतियाँ, प्रौद्योगिकी अपनाने तथा इन्क्यूबेशन सहायता की भूमिका को रेखांकित किया गया, जिससे सहकारी सदस्यों को पारंपरिक मत्स्य एवं जलीय कृषि गतिविधियों से आगे उद्यमिता की कल्पना करने की प्रेरणा मिली।

मूल्य संवर्धन एवं बाज़ार संपर्क के पहलुओं पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. लायना पी. द्वारा मूल्य-वर्धित मछली उत्पादों की पैकेजिंग एवं विपणन पर सत्र लिया गया, जिसमें महिला-नेतृत्व एवं गृह-स्तरीय सहकारी उद्यमों के लिए व्यावहारिक अवसरों पर ज़ोर दिया गया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अर्पिता शर्मा द्वारा मछली खाद (फिश मैन्योर) की तैयारी एवं प्रौद्योगिकी का व्यावहारिक प्रदर्शन किया गया, जिसमें सहकारी समितियों द्वारा अपनाए जा सकने वाले कम-लागत वाले परिपत्र अर्थव्यवस्था मॉडल प्रदर्शित किए गए, जो अतिरिक्त आय सृजन में सहायक हैं।

डॉ. शिवाजी अरगडे द्वारा प्रस्तुत एक्वा-पर्यटन जैसे उभरते व्यावसायिक अवसरों तथा वैज्ञानिक श्री अबुथागिर इब्राहिम एवं डॉ. शिवाजी अरगड़े द्वारा प्रदर्शित मत्स्य क्षेत्र में ड्रोन अनुप्रयोगों ने प्रतिभागियों को प्रौद्योगिकी-आधारित, श्रम-बचत नवाचारों से परिचित कराया। इन सत्रों में विशेष रूप से यह दर्शाया गया कि महिला सदस्य स्वतंत्र रूप से फार्म की निगरानी कैसे कर सकती हैं, श्रम-कठिनाई कम कर सकती हैं, सुरक्षा में सुधार कर सकती हैं तथा प्रौद्योगिकी-सक्षम सहकारी व्यवसायों में आत्मविश्वास के साथ भागीदारी कर सकती हैं।

कार्यक्रमों का समापन संवादात्मक चर्चाओं के साथ हुआ, जिनमें मत्स्य सहकारी समितियों को सशक्त बनाने, आजीविका संवर्धन तथा सहकारी-आधारित एक्वा-बिज़नेस उपक्रमों में पुरुष एवं महिला दोनों की सार्थक भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु व्यावहारिक कौशल, नवाचार एवं सामूहिक उद्यमिता के महत्व पर बल दिया गया। कार्यक्रमों के सुचारु संचालन हेतु सुश्री संचिता एवं श्री मनोज ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

ICAR-CIFE